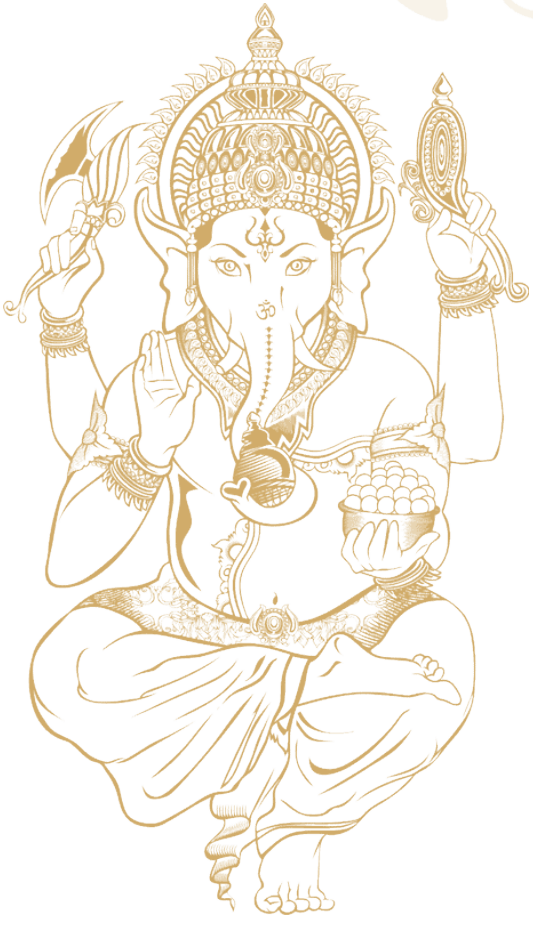

Mr. KUMAR SANDEEP

22 Mar 2015

07:14 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119722501**

तिथि 22/03/2015 **समय** 19:14:00 **वार** रविवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:04:14
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	07:24:31 घं
वेलान्तर	00:07:01 घं
सूर्योदय	05:51:13 घं
सूर्यास्त	18:00:12 घं
चैत्रादि संवत	2072
शक संवत	1937
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	अश्विनी
योग	ऐन्द्र
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चो-चोलुक्य
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

केतु 2वर्ष 10मा 26दि
शुक्र
16/02/2018
16/02/2038

शुक्र	18/06/2021
सूर्य	18/06/2022
चन्द्र	17/02/2024
मंगल	18/04/2025
राहु	17/04/2028
गुरु	17/12/2030
शनि	16/02/2034
बुध	17/12/2036
केतु	16/02/2038

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 7मा 28दि
उल्का
18/11/2021
19/11/2027

उल्का	18/11/2022
सिद्धा	19/01/2024
संकटा	20/05/2025
मंगला	19/07/2025
पिंगला	18/11/2025
धान्या	20/05/2026
भ्रामरी	18/01/2027
भद्रिका	19/11/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:51:51	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	---	0:00			
सूर्य			07:32:35	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	मित्र राशि	1.60	कलत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			07:47:47	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	सम राशि	1.38	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			29:08:27	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	मित्र राशि	1.65	आत्मा	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध		अ	20:50:26	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	0.83	अमात्य	ज्ञाति	वध
गुरु	व		18:58:54	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	केतु	उच्च राशि	1.15	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			12:07:32	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.14	मातृ	कलत्र	जन्म
शनि	व		10:48:21	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	सूर्य	शत्रु राशि	1.29	पुत्र	आयु	मित्र
राहु			15:54:09	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			15:54:09	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

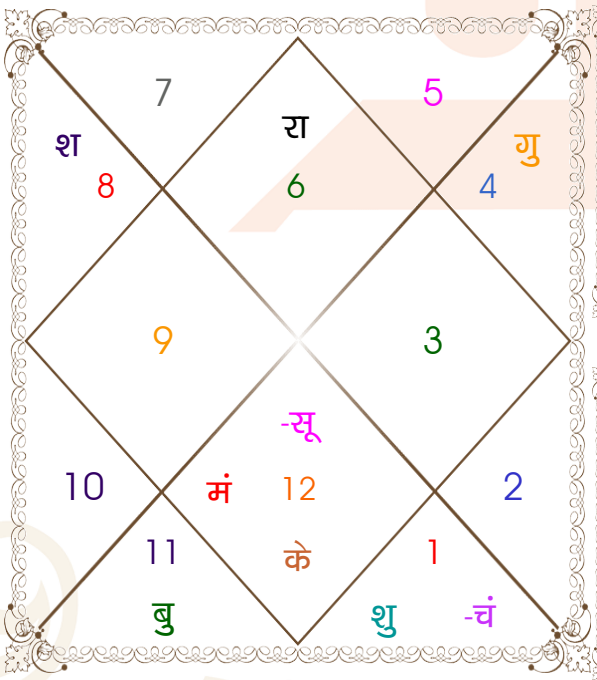

चन्द्र कुंडली

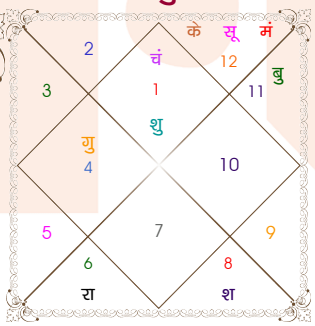

नवमांश कुंडली

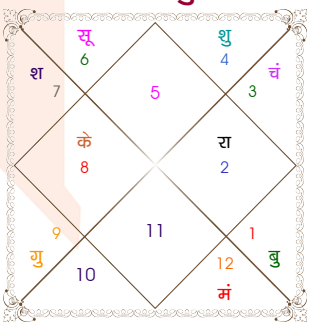

सर्वाष्टकवर्ग

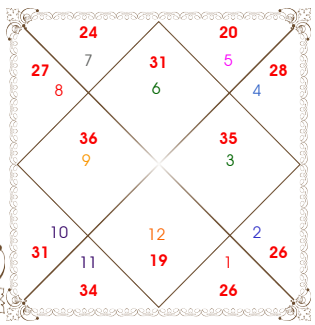

दशमांश कुंडली

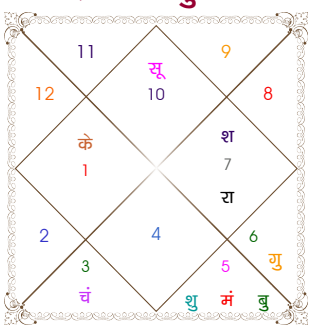

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। आपकी योनि अश्व, देवगण, नाड़ी आद्य, वर्ग सिंह तथा क्षत्रिय वर्ण है। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपका राशि नाम का प्रथम अक्षर "चो" होगा।

आपका जन्म गंडमूल नक्षत्र में हुआ है। यद्यपि तृतीय चरण के लिए इसका दोष न्यून होता है फिर भी सावधानी वश जन्म समय में ही नक्षत्र की शान्ति कर लेनी चाहिए। इसके लिए आपको इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने होंगे तथा शान्ति के दिन दशांश का हवन कराना होगा इस प्रकार विधिपूर्वक शान्ति करने से गण्डमूल का दोष समाप्त हो जाता है।

मंत्र - ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप श्रृंगार तथा आभूषणों के प्रति विशेष रूचि रखने वाले होंगे। आपके सारे कार्य दक्षता तथा बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से होंगे। आप परम सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा सुन्दर एवं रूपवान भी होंगे जिससे आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

कुछ जानने की जिज्ञासा आपके मन में हमेशा बनी रहेगी तथा व्यवहार में आप विनयशील होंगे । आप सबके साथ नम्रता से पेश आयेंगे। आपकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलेगी तथा आजीवन सुख, ऐश्वर्य तथा मान सम्मान का उपभोग करेंगे।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का अनुसरण करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे। दूसरों की सेवा तथा सहयोग करना भी आपका स्वभाव होगा। समस्त भौतिक सुखों का आजीवन उपभोग करने का योग भी बनता है। आपकी पत्नी सुन्दर, सुशील तथा गुणवान तथा सच्चरित्र होंगी जिससे आपकी कीर्ति का अभिवर्द्धन होता रहेगा। साथ ही सुपुत्रों से भी आप युक्त रहेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने कार्यों में व्यस्त रहेंगे जिससे शरीर एवं भोजन के क्रम में व्यवधान उत्पन्न होने से शरीर की स्थूलता बढ़ सकती है।अपने सद्व्यवहार वैभव एवं ऐश्वर्य के कारण आप सर्वसाधारण के सम्माननीय होंगे तथा समाज के सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड्ति रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे तथा माता पिता की अन्य सन्तानों में अकेले ही श्रेष्ठ हो सकते हैं।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

शरीर का वर्ण आपका ताम्र वर्ण के समान गौरवर्ण होगा तथा नेत्रों में लाली का आभास होगा। सिर में किसी चोट या व्रण का निशान भी होगा।

हाथ, पांव कोमल कान्ति से युक्त होंगे। पानी से आप स्वाभाविक रूप से भय की अनुभूति करेंगे। जीवन की कठिन परिस्थितियों का आप साहस के साथ मुकावला करेंगे क्यों कि

आप साहसी प्रकृति के होंगे। सामाजिक सम्मान का आपको अभाव नहीं रहेगा । बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को ही मान सम्मान समझेंगे जिससे यदा कदा विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। मित्रों, सहयोगियों तथा पुत्रों की आपके पास बहुलता रहेगी। स्त्री जाति से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। परन्तु स्नेहशील प्रवृति के कारण सभी से सहानुभूति एवं सद्व्यवहार रहेगा। इसी कारण सर्वसामान्य का आपके ऊपर विश्वास रहेगा तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति भी होगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्विततं सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

शीघ्र ही नाराज होने के साथ साथ आप शीघ्र प्रसन्न हो जायेंगे ऐसी आपकी प्रवृति की एक विशेषता होगी। घूमना या सुदूर क्षेत्रों का परिभ्रमण आपको रूचिकर लगेगा। आपके हाथ की हथेली में बहादुरी दर्शाने वाले चिन्ह यथा चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। महिला वर्ग में आपको विशेष प्रिय एवं आदरणीय माना जाएगा। आप अपनी विकट परिस्थितियों को छोड़ कर दूसरे की तुरन्त सहायता करने के लिए तैयार रहेंगे। यह भाव आपके अर्न्तमन में सदैव विद्य मान रहेगा।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोऽङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

आपके बुजुर्ग एवं सम्मानीय संबधियों के नाराजी का कारण बनेगी फल स्वरूप आपका आपस में अलगाव हो सकता है अर्थात या तो वे आपसे अलग होंगे या आप उन से। आप सारे कार्य अपनी पत्नी के निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। साथ ही वैभव का आपके पास अभाव नहीं होगा तथा सामाजिक सम्मान पूर्ण रूप से प्राप्त होता रहेगा।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

घूमने के लिए आप ऐसे स्थानों का चुनाव करेंगे जो अगम्य हो अर्थात् आसानी से जहाँ न जा सकें। सामाजिक संबधों की विस्तृतता के कारण आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का भी प्रयोग कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

उग्रता का समावेश आपकी प्रवृति में विद्यमान रहेगा इससे क्रोध के रूप में प्रयोग से आप अपने लिए कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। साथ ही समयानुसार आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय ले सकते हैं।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कितांङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

आपकी रूचि यौगिक क्रियाओं में भी बनी रहेगी तथा सिर में बालों की अल्प संख्या गंजेपन का अहसास कराएगी, पितकारक पदार्थों का अल्पमात्रा में प्रयोग करना श्रेष्ठ रहेगा। अन्यथा मस्तिष्क में किसी भी प्रकार विकार उत्पन्न हो सकता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

देवगण में उत्पन्न होने से आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठ होगी। आप हमेशा सत्य बोलेंगे। अन्य लोगों को आपकी वाणी द्वारा कभी भी कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा। बुद्धि आपकी सादगी से युक्त होगी अर्थात आप किसी भी बात को सादगी से ग्रहण करने की क्षमता रखेंगे। सात्विक एवं अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अच्छा लगेगा। समाज में आप गुणज्ञ अर्थात् गुणों को जानने वाले के रूप में देखे जाएंगे। महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुण आप में पाए जाएंगें। भौतिक सम्पदाओं की आपके पास कमी नहीं रहेगी तथा जीवन सुख एवं चैन से व्यतीत करेंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होगा। दान देना आप की प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप श्रद्धापूर्वक दान देंगे। आप अत्यन्त सरल हृदय होंगे तथा छल और दिखावटीपन से दूर रहेंगे। भोजन आप थोडी ही मात्रा में लेना पसन्द करेंगे तथा समाज में श्रेष्ठ विद्वानों में आप की गिनती होगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्वयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे। प्रत्येक कार्य को आप स्वच्छन्दता पूर्वक करना चाहेंगे। बाहरी हस्तक्षेप या सलाह आपको बिलकुल पसन्द नहीं आएगी। अच्छे गुणों से आप सुशोभित रहेंगे। बल तथा साहस की आप में कोई कमी नहीं होगी जो भी कार्य करेंगे अपने साहस और बल पर आश्रित रहकर करेंगे। समाज में आपका अच्छा प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग दिल से आपको आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके अन्दर वफादारी तथा स्वामिभक्ति के सम्पूर्ण गुण पाए जाएंगे। आप जहाँ भी कार्य करेंगे वहाँ के स्वामी के आप विशेष कृपा पात्र रहेंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण

संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा,षष्ठी, एकादशी, शुक्ल तथा कृष्णपक्ष दोनो की तिथियां, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा यह समय अनिष्टिकारी हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार का प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि कार्य न करें अशुभ फल होंगे तथा कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। इसके अलावा मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण प्रथम प्रहर तथा जव चन्द्रमा मेष राशि पर हो तब भी कोई शुभ कार्य न करें। अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी या न्यूनतम लाभ होगा। इसी समय शरीर की भी पूर्ण रूप से सुरक्षा करनी चाहिए।

आप जब समय को प्रतिकूल महसूस कर रहे हों मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, गेहूँ, गुड़, घी, लालवस्त्र लाल कनेर का पुष्प, आदि पद्धार्थों का यथा शक्ति योग्य पात्र को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तात्रीय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप करवाकर शान्ति करानी चाहिए। इससे मानसिक उद्विग्नता कम होगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। साथ ही मंगलवार का उपवास भी रखना चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।